विक्रमपुर (बिकमपुर) में ऐतिहासिक प्रतिष्ठा महोत्सव

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब, पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ठाणा 3 की पावन निश्रा में एवं प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में दि. 15 नवंबर 2017 को बीकमपुर में मूलनायक परमात्मा महावीर स्वामी मंदिर, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा उल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस जिन मंदिर दादावाडी का निर्माण कार्य गतवर्ष प्रारंभ हुआ था। लगभग सवा वर्ष की अल्प अवधि में शिखरबद्ध जिन मंदिर, सामरण युक्त दादावाडी, धर्मशाला, भोजनशाला, पेढी आदि का भव्य निर्माण संपन्न हुआ।

ता. 12 नवम्बर को पूज्य आचार्यश्री का प्रवेश हुआ। विहार व्यवस्था में बीकानेर केयुप व बज्जू जैन संघ का योगदान रहा। ता. 13 को कुंभस्थापना के साथ समारोह का प्रारंभ हुआ। दि. 14 नवंबर को दोपहर 1 बजे गांव स्थित किले से शोभायात्रा निकाली गई। चतुर्विध संघ, परमात्मा का भव्य रथ, इंद्रध्वजा एवं विविध झांकियों के साथ दो हजार से अधिक श्रद्धालुओं की उपस्थिति... गांव के मुख्य रास्ते भी संकरे नजर आने लगे।

प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर केन्द्रीय संसदीय कार्य एवं जल संसाधन राज्यमंत्री अर्जुनरामजी मेघवाल, कोलायत विधायक भंवरसिंहजी भाटी सहित अनेक जन प्रतिनिधियों, श्री जिनदत्त–कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी के पदाधिकारी व देश के विभिन्न स्थानों से आए जैन समाज के गणमान्य जनों की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरिजी ने इस नगर की ऐतिहासिकता का वर्णन करते हुए फरमाया कि विक्रमपुर नगर महाराजा विक्रमादित्य द्वारा स्थापित हुआ था। इस धरा पर अनेक आचार्य भगवंतों का पदार्पण हुआ। युग प्रधान प्रथम दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरिजी म. की निश्रा में 500 मुनियों व 700 साध्वियों ने एक साथ दीक्षा इसी नगर में ग्रहण की थी। मणिधारी के नाम से विश्व में विख्यात दूसरे दादा गुरुदेव का जन्म इसी नगर में भादवा सुदी 8 विक्रम संवत् 1197 को श्रीमती देल्हण देवी की कोख से हुआ था। और विक्रम संवत 1203 में मात्र छह वर्ष की आयु में संयम ग्रहण कर एक कीर्तिमान स्थापित किया था। मात्र आठ वर्ष की आयु में आचार्य पद पर बीकमपुर में ही आप सुशोभित हुए थे।

आचार्यश्री ने फरमाया– श्री जिनदत्त–कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी के संरक्षक एवं पूर्व अध्यक्ष मोहनचंदजी ढड्ढा ने इस पवित्र स्थल बीकमपुर की विशिष्टताओं को सामने लाने, कम समय में जिनमंदिर दादावाडी, धर्मशाला, भोजनशाला, कार्यालय आदि का निर्माण करके इस भूमि पर इतिहास की भव्य विरासत का पुनरुद्धार किया है। श्री ढड्ढाजी की कार्यशैली व शासन भक्ति की अनुमोदना करते हुए कहा कि कोडैकनाल में प्रमोद वाटिका जिन मंदिर आपने स्वद्रव्य से निर्मित किया। तत्पश्चात् आपके लगातार पुरूषार्थ से रामदेवरा, कन्याकुमारी, मदुराई व विक्रमपुर में जिनमंदिर व दादावाडी का निर्माण हुआ।

अब चतुर्थ दादा जिनचन्द्रसूरि की जन्मभूमि खेतासर की दादावाडी का निर्माण अतिशीघ्र आपको करवाना है। पूज्यश्री ने स्थानीय गांव, विधायक एवं मंत्री महोदय से कहा– यह तीर्थ आपका है। और इसे आपको सम्हालना है।

समारोह में पधारे केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुनरामजी मेघवाल ने कहा कि ऐतिहासिक नगर बीकमपुर में जैन मंदिर व दादाबाड़ी के बनने से आम जन यहां के प्राचीन इतिहास व जैन संस्कृति से रूबरू हो सकेंगे। बीकमपुर बीकानेर जिले का धर्म, पर्यटन व पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान के रूप में विकसित होगा। बीकमपुर के किले में विक्रम संवत् 60 की बनी हुई एक देवी की देहरी एवं जैन मंदिर के अवशेषों पर व्यापक

शोध की आवश्यकता है। उन्होंने अपनी ओर से बीकमपुर के विकास में अपेक्षित सहयोग का आश्वासन दिया। गौरतलब है कि बिकमपुर नगर आदर्श गांव योजना के अंतर्गत शीघ्र ही विकसित बनने जा रहा है। इस गांव को श्री मेघवाल ने केन्द्रीय योजना के तहत गोद लिया है। उन्होंने कहा– पूज्य गुरुदेव श्री के पधारने से इस क्षेत्र का अपूर्व विकास होगा।

स्थानीय विधायक श्री भंवरसिंह भाटी ने पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए तीर्थ के विकास में पूर्ण योगदान करने का आश्वासन दिया।

बिकमपुर तीर्थ संकुल निर्माण के संयोजक श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने गच्छाधिपतिश्री को वंदन कर कहा कि प्रतिष्ठा महोत्सव में दो हजार से अधिक भक्तों के, आप सभी के आगमन से हम पेढी के पधाधिकारी गौरव का अनुभव कर रहे हैं। यह मणिधारी गुरुदेव की ही कृपा रही कि मुझे इस तीर्थ से जुडने एवं परमात्मा महावीरस्वामी की भव्य मूर्ति को भराने का लाभ मिला। पेढी की तरफ से सभी आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित कर तीर्थ से जुडने का निवेदन किया। जिसे उपस्थित सभी ने करतल ध्वनि से हर्षारव कर मणिधारी गुरुदेव का जयघोष किया।

पूज्य आचार्यश्री के सान्निध्य में प्रातः 10 बजे मंदिर में मूलनायक परमात्मा महावीर स्वामी, नाकोडा भैरव, अंबिका माता एवं दादावाड़ी में मूलनायक मणिधारी दादा श्री जिनचंद्रसूरि गुरुदेव की विशिष्ट प्रतिमा एवं रंगमंडप में दादा गुरु श्री जिनदत्तसूरि व जिनकुशलसूरि की प्रतिमा एवं चतुर्थ दादा गुरुदेव तथा विक्रमपुर के रत्न आचार्य श्री जिनपतिसूरि के चरण पादुकाओं व गोरे काले भैरव को प्रतिष्ठित किया।

श्री महावीर स्वामी जिनमंदिर के उपर अमर ध्वजा फहराने का लाभ श्रीमती जमनादेवी खेतमलजी गांधी परिवार चितलवाना ने लिया। जिन मंदिर पर स्वर्ण कलश का लाभ श्रीमती टीपुदेवी जावंतराजजी परिवार ने लिया। मणिधारी दादावाडी पर अमर ध्वजा फहराने का लाभ संघवी शा. लाधमलजी मावाजी मरडिया परिवार चितलवाना ने लिया। दादावाडी पर स्वर्णकलश का लाभ श्री भीकचंदजी धनराजजी देसाई परिवार सिणधरी वालों ने लिया।

मूलनायक श्री महावीर स्वामी को बिराजित करने का लाभ श्री मोतीलालजी संपतराजजी झाबक परिवार रायपुर ने लिया। मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरिजी को बिराजित करने का लाभ संघवी श्रीमती शांतिदेवी पुखराजजी गुलेच्छा परिवार मोकलसर ने लिया। दादावाडी में श्री जिनदत्तसूरि बिराजमान का लाभ पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से उनकी शिष्या पू. साध्वी श्री विज्ञांजनाश्रीजी म. के सांसारिक परिवार श्रीमती निर्मलादेवी रतनलालजी बच्छावत परिवार फलोदी ने लिया। श्री जिनकुशलसूरि बिराजमान पू. बहिन म.डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से धमाना निवासी श्रीमती सायरदेवी छगनलालजी देसाई परिवार ने लिया। चौथे दादा जिनचन्द्रसूरि के चरण बिराजमान का लाभ श्री रतनचंदजी अशोकचंदजी गुलेच्छा परिवार चेन्नई ने तथा आचार्य जिनपतिसूरि के चरणों का लाभ संघवी श्री वंसराजजी टामचंदजी मंडोवरा सिणधरी वालों ने लिया।

नाकोडा भैरव बिराजमान का लाभ श्रीमती धाई देवी शंकरलालजी पुरूषोत्तमजी सेठिया परिवार चौहटन–बाडमेर–बालोतरा तथा श्रीमती अंबिकादेवी का लाभ श्री माणकचंदजी अरूणकुमारजी ललवानी सिवाना वालों ने लिया। गोरा भैरव का लाभ श्री वनेचंदजी लालचंदजी मंडोवरा सिणधरी तथा काले भैरव का लाभ श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड तिरूपातूर वालों ने लिया। स्नात्र पूजा हेतु पंचतीर्थी, नवपद यंत्र, अष्ट मंगल की पाटली का लाभ महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. की प्रेरणा से श्री रिखबचंदजी झाडचूर परिवार जयपुर–मुंबई वालों ने लिया।

इस संकुल तीर्थ के निर्माण कार्य में फलोदी के यशवर्धन गुलेछा एवं हेमचन्द्र शर्मा की सेवाएं अनुमोदनीय रही। उनका बहुमान किया गया।

समारोह में अखिल भारत के खरतरगच्छ संघों के प्रतिनिधि, श्री भीकचंद धनराज देसाई परिवार ने 350 से अधिक यात्रियों का संघ, बाडमेर, बीकानेर, चौहटन, फलोदी, चौहटन, बज्जू, उदयरामसर, रायपुर, धमतरी, चेन्नई, बैंगलोर, अहमदाबाद, सूरत, चितलवाना, सांचोर, हाडेचा, सिणधरी, बालोतरा, आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में भक्तों का आगमन हुआ। आयोजन को सफल बनाने में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद की बीकानेर शाखा, फलोदी शाखा ने पूरा योगदान दिया। साथ ही फलोदी के मित्र मंडल व महिला मंडलों ने पूरा सहयोग दिया। सभी का संस्था की ओर से बहुमान किया गया।

प्रेषक अशोक पारख

बीकानेर में प्राचीन प्रतिमा प्राकट्य महोत्सव

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज की पावन निश्रा में व उनके निर्देशन में बीकानेर के चिंतामणि आदिनाथ जिन मंदिर के भूगर्भ में बिराजमान 1116 प्राचीन प्रतिमाओं को ता. 27 नवम्बर 2017 को मंत्रोच्चारणों के साथ प्रकट किया गया। पूर्ण सुरक्षा के साथ भूगर्भ से प्रतिमाओं को प्रकट करने का लाभ लिया श्री पुरखचंदजी धनराजजी, नेमचंदजी डागा परिवार ने लिया।

ता. 26 नवम्बर को पूज्य आचार्यश्री के शिष्य पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने क्षेत्रपाल आदि आह्वान की प्रक्रिया विधि विधान के साथ संपन्न करवाई।

इस अवसर पर तपागच्छीय पंन्यास श्री पुंडरिकरत्नविजयजी म. आदि साधु मंडल, प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. आदि का सानिध्य प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर प्रवचन करते हुए पूज्यश्री ने इन प्रतिमाओं के प्रकटीकरण का इतिहास सुनाया। उन्होंने फरमाया– अकबर के सेनापति तुरसमखान ने ये प्रतिमाऐं सिरोही आदि क्षेत्रों से लूटी थी। और इनमें भारी मात्रा में सोना होने के कारण वह इन्हें गलाने के लिये ले गया। इस बात की खबर जब परमार्हत् श्रावक श्री कर्मचंद्र बच्छावत जो अकबर के दरबार में मंत्री थे, को लगी तो उन्होंने सम्राट् से प्रतिमाओं के वजन के बराबर सोना दिया। फलस्वरूप सम्राट् ने वे प्रतिमाऐं कर्मचंद्र बच्छावत को सौंप दी।

कर्मचंद्र बच्छावत की प्रभु भक्ति की जितनी महिमा की जाय, उतनी कम हैं। वे प्रतिमाऐं फतेहपुर सीकरी से बीकानेर रियासत के राजा रायसिंह के नेतृत्व में बीकानेर लाई गई। श्री बच्छावत ने अपने गुरुदेव चतुर्थ दादा श्री जिनचन्द्रसूरि के निर्देशानुसार श्री चिंतामणि आदिनाथ मंदिर में भूगर्भ स्थित कक्ष में बिराजमान की। कुल 1116 प्रतिमाओं में एक भगवान महावीर की प्रतिमा गुप्तकालीन है। 9 प्रतिमाऐं 11वीं शताब्दी की, 10 प्रतिमाऐं 12वीं सदी की, 63 प्रतिमाऐं 13वीं सदी की, 259 प्रतिमाऐं 14वीं सदी की, 436 प्रतिमाऐं 15वीं सदी की तथा 339 प्रतिमाऐं 16वीं सदी की है।

प्रन्यास के अध्यक्ष श्री निर्मलजी धारीवाल ने बताया कि पिछले सौ वर्षों के इतिहास में कुल मिलाकर सात बार प्रतिमाओं को प्रकट किया गया। इस बार पूज्य गच्छाधिपतिश्री के मार्गदर्शन में प्रन्यास द्वारा प्रकट की जा रही है। प्राकट्य महोत्सव पांच दिन तक चला। ता. 27 से प्रारंभ महोत्सव 1 दिसम्बर तक चला। हजारों हजारों लोगों ने परमात्मा के दर्शन, पूजन, अर्चन का लाभ लिया।

ता. 27 को श्री सिद्धचक्र महापूजन, ता. 28 को भक्तामर महापूजन पढाया गया। ता. 29 श्री 108 पार्श्वनाथ महापूजन पढाया गया। ता. 29 को प्रातः अठारह अभिषेक व दोपहर को श्री शांतिस्नात्र महापूजन पढाया गया। ता. 2 दिसम्बर विधि विधान पूर्वक पुनः सभी प्रतिमाओं को भूगर्भ में बिराजमान किया गया।

श्री चिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास के सचिव चन्द्रसिंह पारख ने बताया कि स्थानीय आई जी श्री विपिन पांडेय पधारे और उन्होंने परमात्मा के दर्शन किये। प्रन्यास द्वारा उनका स्वागत किया गया।

इस महोत्सव की व्यवस्था में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बीकानेर शाखा तथा अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् बीकानेर शाखा का सराहनीय योगदान रहा।

तुलसी विहार गंगाशहर में प्रतिष्ठा का अकल्पनीय आयोजन

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्रीमनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. आदि मुनि मंडल ठाणा 8 एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. पू. दिव्यदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6, पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. पू. अमितयशाश्रीजी म. आदि ठाणा 8, पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 की परम पावन सानिध्यता में गंगाशहर के तुलसी विहार कॉलोनी में बने श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनमंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा अत्यन्त आनंद व अभूतपूर्व आयोजन के साथ संपन्न हुई।

इस पावन अवसर पर तपागच्छीय पूज्य पंन्यास प्रवर श्री पुंडरिकरत्नविजयजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री जिनेन्द्रप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पार्श्वचन्द्रगच्छीय पूज्य साध्वी श्री पद्मप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा संघ की विनंती पर पधारे।

इस शिखरबद्ध मंदिर का निर्माण पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री के मार्गदर्शन में मात्र ढाई तीन माह में हुआ। इसका भूमिपूजन, शिलान्यास इसी चातुर्मास में 14 अगस्त 2017 को शुभ मुहूर्त्त में हुआ था।

समारोह का प्रारंभ पूज्य गुरुभगवंतों के मंगल प्रवेश से ता. 23 नवम्बर से हुआ। उसी दिन कुंभ स्थापना आदि विधि विधान हुआ। इन्द्र महाराज बने श्री अशोककुमारजी गोलेच्छा!

ता. 24 को परमात्मा का जन्म कल्याणक मनाया गया। ता. 25 को ऐतिहासिक वरघोडा निकाला गया। पूरे बीकानेर में चर्चा रही कि ऐसा वरघोडा बीकानेर के इतिहास में नहीं निकला। इस कॉलोनी में मात्र दो घर मंदिरमार्गी होने पर भी ऐसा जबरदस्त उत्साह व उल्लास अकल्पनीय था।

रात्रि को अंजनशलाका का महाविधान संपन्न हुआ। ता. 26 को परमात्मा की भव्य प्रतिष्ठा संपन्न हुई। उस समय कॉलोनी की सारी सडकें श्रद्धालुओं से पूर्ण थी।

अमर ध्वजा चढाने का लाभ श्री शांतिलालजी बैद परिवार गंगाशहर वालों ने लिया। स्वर्णकलश का लाभ श्री तोलारामजी संजयकुमारजी बैद परिवार गंगाशहर वालों ने लिया। मूलनायक परमात्मा को बिराजमान का लाभ श्री अशोककुमारजी जयकुमारजी गोलेच्छा परिवार ने, आदिनाथ का लाभ श्री जयकुमारजी पुखराजजी पुगलिया परिवार ने, श्री महावीर स्वामी का लाभ श्री सुमेरमलजी दफ्तरी परिवार ने, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि का लाभ श्री संजयकुमारजी बोथरा परिवार ने, योगीराज शांतिसूरि का लाभ नरपतजी रिषभजी सेठिया परिवार ने, नाकोडा भैरव का लाभ श्री अशोककुमारजी जयकुमारजी गोलेच्छा परिवार ने, भोमिया देव का लाभ विजयचंदजी मोहितजी रोहितजी डागा परिवार ने, पद्मावती देवी का लाभ श्री बसंतकुमारजी विजयकुमारजी नवलखा परिवार ने, श्री सरस्वती देवी का लाभ श्री फागुणचंदजी कमलचंदजी पारख परिवार ने लिया।

श्रृंगार चौकी पर कलश चढाने का लाभ श्री मूलचंदजी सुरेन्द्रकुमारजी भादाणी परिवार ने लिया।

प्रतिष्ठा के पश्चात् पूज्य गुरुदेव एवं साध्वी भगवंतों को कामली ओढाई गई। सभा का संचालन करते हुए श्री हेमन्तजी सिंघी ने कहा– पूज्य गुरुदेव का ही यह चमत्कार है जो इतने कम समय में जिन मंदिर निर्मित हुआ और कल्पनातीत समारोह के साथ प्रतिष्ठा संपन्न हुई। बीकानेर नगर में एक इतिहास की अनूठी रचना हुई। इस मंदिर के निर्माण में पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. का अनुमोदनीय मार्गदर्शन सतत प्राप्त रहा।

सिणधरी से श्री नाकोडाजी तीर्थ पैदल संघ

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज की पावन निश्रा में सिणधरी नगर से श्री नाकोडा तीर्थ का छह री पालित पैदल यात्रा संघ का आयोजन होगा।

सिणधरी निवासी श्री भीकचंदजी धनराजजी देसाई परिवार के द्वारा होने वाला यह अनूठा अनुष्ठान ता. 23 दिसम्बर से प्रारंभ होगा। कालुडी, टापरा, असाडा, जसोल होता हुआ यह संघ ता. 28 को नाकोडाजी तीर्थ पर प्रवेश करेगा। ता. 29 को संघपति माला का महाविधान संपन्न होगा।

श्री देसाई परिवार 350 श्रद्धालुओं का संघ लेकर विक्रमपुर की प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक अवसर पर पधारे। ता. 15 को प्रतिष्ठा के पावन अवसर पूज्यश्री के समक्ष विनंती प्रस्तुत की।

उनकी विनंती को स्वीकार करते हुए पूज्यश्री ने फरमाया– श्री देसाई परिवार की सन् 2013 से विनंती चल रही है, पर हमारा विहार अन्य क्षेत्रों में होने के कारण योग नहीं बन पाया।

पूज्यश्री ने ज्योंहि शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया, पूरा संघ झूम उठा। नृत्य करते हुए अपने आनंद को अभिव्यक्त किया। पूज्यश्री ने फरमाया– विक्रमपुर तीर्थ अब आपसे जुड गया है। इस तीर्थ की प्रतिष्ठा में आपके संघ का खूब योगदान रहा है। उन्होंने कहा– विक्रमपुर तीर्थ की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा में श्री भीकचंदजी धनराजजी देसाई का अनूठा योगदान है।

तुलसी विहार आराधना भवन का उद्घाटन

बीकानेर गंगाशहर में तुलसी विहार कॉलोनी में श्रीमती रूपादेवी श्रीमती भंवरीदेवी सोहनलालजी पुत्र बसंतकुमारजी विजयकुमारजी नवलखा परिवार द्वारा पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से निर्मित 'अर्हम् आराधना भवन' का उद्घाटन ता. 26 नवम्बर 2017 को प्रतिष्ठा के मंगल अवसर पर किया गया।

पूज्य गुरुदेव श्री ने मंत्रोच्चारण कर नवलखा परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया। श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नवलखाजी ने इस आराधना भवन का निर्माण करवाया।

उदयरामसर में प्रतिष्ठा संपन्न

बीकानेर से 13 कि.मी. पर स्थित उदयरामसर में अतिप्राचीन चमत्कारी दादावाडी है। इस दादावाडी का निर्माण बाफना परिवार जैसलमेर वालों द्वारा कराया गया था। इस विशाल दादावाडी में श्री चिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास द्वारा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से जिन मंदिर बनाने का निर्णय लिया गया।

इस जिन मंदिर का संपूर्ण लाभ श्री भीखमचंदजी पूनमचंदजी प्रेमचंदजी श्रीपालजी नाहटा परिवार द्वारा लिया गया। मंदिर का शिलान्यास ता. 6 नवम्बर 2017 को किया गया। ता. 3 दिसम्बर 2017 को इसकी प्रतिष्ठा पूज्य आचार्यश्री की पावन निश्रा में संपन्न हुई।

संपूर्ण प्रतिष्ठा का लाभ जिन मंदिर के लाभार्थी परिवार श्री भीखमचंदजी पूनमचंदजी प्रेमचंदजी श्रीपालजी नाहटा परिवार ने लिया।

अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ अपार भीड के मध्य परमात्मा वासुपूज्य भगवान, गौतमस्वामी एवं श्री नाकोडा भैरव की प्रतिमा संपन्न हुई। इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री, मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म.एवं पूज्य पंन्यास श्री पुण्डरीकरत्नविजयजी म., पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ। श्री नाहटा परिवार ने इस मंदिर के संचालन हेतु विशाल राशि प्रन्यास को अर्पण की।

प्रन्यास की ओर से अध्यक्ष श्री निर्मलजी धारीवाल ने नाहटा परिवार का बहुमान किया। इस अवसर पर मात्र 25 दिनों में जिन मंदिर का निर्माण करने वाले सोमपुरा श्री विनोद शर्मा का बहुंमान किया गया।

श्री चिंतामणि आदिनाथ मंदिर भूगर्भ स्थित प्राचीन 1116 जिन बिम्बों के प्राकट्य महोत्सव में श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् का सराहनीय पुरूषार्थ रहा। उन्होंने सारी व्यवस्था सम्हाली। प्रन्यास की ओर से युवा परिषद् का बहुमान अभिनंदन किया गया।

बिजयनगर में चढावे संपन्न

अजमेर जिले में स्थित बिजयनगर में नवनिर्मित श्री नाकोडा पार्श्वनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के संबंध में प्रतिमाजी भराने, राजदरबार व नौकारसियों पूजाओं आदि के चढावे हेतु ता. 26 नवम्बर 2017 को जाजम का शुभ मुहूर्त्त किया गया।

यह जाजम मुहूर्त्त पूजनीया प्रवर्तिनी आगम ज्योति श्री प्रमोदश्रीजी म. सा. की शिष्या पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा में किया गया। पूज्याश्री का प्रवेश 26 को करवाया गया। पूज्याश्री के मंगल प्रवचन वासक्षेप के पश्चात् जाजम के चढावे प्रारंभ हुए। कल्पनातीत चढावों के वातावरण ने पूरे क्षेत्र में प्रभु भक्ति का अनूठा माहौल व्याप्त हो गया। पू. साध्वी श्री नीलांजनाश्रीजी म. उदयपुर से विहार कर चार पांच दिन पहले बिजयनगर पधार गये थे।

इस मंदिर का निर्माण पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. की प्रेरणा से श्री नाकोडा पूर्णिमा मंडल बिजयनगर की ओर से करवाया जा रहा है। इस मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में 12 मार्च 2018 को संपन्न होगी। प्रतिष्ठा हेतु पंच दिवसीय महोत्सव का आयोजन किया जायेगा। जाजम के चढावे करने हेतु विधिकारक श्री अरविन्दजी चौरडिया इन्दौर वाले पधारे थे।

गणाधीश पद समारोह

पूज्य मोहनलालजी महाराज के समुदाय के पर्याय ज्येष्ठ पंन्यास श्री विनयकुशल गणिजी महाराज को समुदाय के गणाधीश पद से विभूषित किया गया।

यह समारोह पालीताना में ता. 6 दिसम्बर 2017 पौष वदि 3/4 बुधवार को समायोजित किया गया। इस अवसर पर बाहर से बडी संख्या में श्रद्धालु पधारे।

साधु साध्वी समाचार

0 पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म. आदि ठाणा 2 बाडमेर में बिराजमान है। उनकी पावन निश्रा में चौहटन से प्रथम बार ब्रह्मसर जैसलमेर लौद्रवाजी अमरसागर तीर्थ हेतु छह री पालित संघ यात्रा का भव्य आयोजन होने जा रहा है। यह संघ 21 दिसम्बर 2017 को चौहटन से प्रस्थान करेगा। माला महोत्सव 9 जनवरी 2018 को ब्रह्मसर में होगा।

0 पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा 2 पालीताना पधार गये हैं। जहॉ उनकी निश्रा में पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. की प्रेरणा से नवाणुं यात्रा का भव्य आयोजन होने जा रहा है।

0 पूज्य मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. चौहटन से विहार कर पालीताना पधार रहे हैं।

0 पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा विक्रमपुर की प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् बीकानेर पधारे। उन्होंने बीकानेर से ता. 2 दिसम्बर को विहार कर उदयरामसर होते हुए नागोर की ओर विहार किया है।

0 पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा कुछ दिनों की चेन्नई में स्थिरता के पश्चात् पार्श्वमणि तीर्थ पेद्ददतुम्बलम की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा विहार कर 5 दिसम्बर को अमलनेर पधारे हैं। जलगांव में आपकी निश्रा में आपके 53वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में दादावाडी में पार्श्व पद्मावती महापूजन का भव्य आयोजन ता. 1 दिसम्बर को किया गया। जिसका लाभ लूंकड परिवार के श्रीमती पद्माबाई परिवार ने लिया।

0 पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. पू. डॉ. साध्वी श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा विहार करते हुए नीमच, निम्बाहेडा, भीलवाडा होते हुए बिजयनगर पधारे। जहॉ उनकी पावन निश्रा में ता. 26 नवम्बर को जाजम के अभूतपूर्व चढावे संपन्न हुए। वहॉ से विहार कर ता. 30 नवम्बर को ब्यावर पधारे। वहॉ से जोधपुर होते हुए सिणधरी पधारेंगे।

0 पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 मुंबई से विहार कर दहाणुं पधारे हैं। वहॉ से वे सूरत, बडौदा होते हुए अहमदाबाद की ओर विहार कर रहे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा गाजियाबाद से विहार कर जयपुर होते हुए ब्यावर पधारे। अभी ब्यावर बिराजमान है।

0 पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा नागोर से विहार कर बीकानेर पधारे। यहॉ से ता. 3 दिसम्बर को फलोदी की ओर विहार किया है। वे फलोदी होते हुए चौहटन से ब्रह्मसर के संघ में सम्मिलित होंगे।

0 पूजनीया साध्वी डॉ. शासनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 पालीताना पधार गये हैं। श्री जिनहरि विहार में बिराजमान है। वहॉ 15 दिनों की स्थिरता के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा 6 कानपुर से विहार कर ता. 5 दिसम्बर को बनारस पधारे हैं।

0 पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 विहार कर चेन्नई पधार गये हैं।

0 पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3 खापर से विहार कर बडौदा पधार गये हैं। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् पालीताना की ओर विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 नलखेडा से विहार कर रतलाम प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारे हैं।

0 पू. साध्वी श्री वसुंधराश्रीजी म. आदि ठाणा 3 चिकित्सा हेतु दुर्ग में बिराजमान है।

0 पू साध्वी श्री मधुरिमाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 बडौदा से विहार कर अहमदाबाद पधार गये हैं।

0 पूजनीया साध्वी प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 पालीताना पधार गये हैं। उनकी प्रेरणा से नवाणुं यात्रा का भव्य आयोजन ता. 3 दिसम्बर से प्रारंभ हुआ है।

0 पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 पालीताना पधार गये हैं। नवाणुं यात्रा में आपकी सानिध्यता रहेगी।

0 पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 बीकानेर उदयरामसर प्रतिष्ठा के पश्चात् ता. 3 दिसम्बर की शाम को नागोर की ओर विहार किया है। वे नागोर से पालीताना की ओर विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री प्रियंवदाश्रीजी म. प्रशमिता श्रीजी म. आदि ठाणा जैसलमेर चातुर्मास के पश्चात् विहार कर बाडमेर पधार गये हैं। वे चौहटन से ब्रह्मसर तीर्थ छह री पालित संघ में सम्मिलित होंगे।

जहाज मंदिर में वांचना शिविर 6 से 8 जनवरी 2018

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में जहाज मंदिर मांडवला में त्रिदिवसीय वांचना शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर में धर्म, स्वाध्याय, विधि विधान, जीवन कला आदि के संदर्भ में पूज्य गुरु भगवंतों द्वारा वांचना दी जायेगी।

सकल श्री संघ से अनुरोध है कि इस शिविर में अधिक से अधिक लोग पधार कर लाभ लें।

—प्रेषक
जहाज मंदिर कार्यालय